C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय : हिंदी 'अ'

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड-क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: [1×2=2] [2×4=8] [10]

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे समस्याएँ बौनी हैं। लेकिन समस्या एक प्रतिभा को ख़ुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक ख़ास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुमुखी लोग स्पर्धा होने से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पर्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान् माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे

कई लोग। लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीद्वार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दख़ल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में- 'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें।

1. बहुमुखी प्रतिभा क्या है? प्रतिभा से समस्या कब, कैसे हो जाती है?

   उत्तर : एक ही व्यक्ति में अनेक गुणों का होना बहुमुखी प्रतिभा कहलाती है। बहुमुखी प्रतिभा वालों को कई कामों को पूरा करने की इच्छा होती है और यही उनकी समस्या भी बन जाती है क्योंकि कभी-कभी एक दूसरे क्षेत्र में हाथ आजमाना दूसरे के काम में दखल देना जैसा हो जाता है।

2. बहुमुखी प्रतिभा वालों की किन कमियों की ओर संकेत है?

   उत्तर : बहुमुखी लोग स्पर्धा, असफलता और आलोचना से घबराते है।

3. बहुमुखी प्रतिभागियों की पकड़ किन क्षेत्रों में होती है और उनकी असफलता की संभावना क्यों है?

उत्तर : बहुमुखी प्रतिभागियों की पकड़ कई क्षेत्रों में होती है। उनकी असफलता की संभावना इसलिए होती क्योंकि वे एक चीज पूरी होने से पहले ही दूसरी की ओर भागने लगते हैं।

4. ऐसे लोगों का स्वभाव कैसा होता है और वे प्राय: सफल क्यों नहीं हो पाते?

उत्तर : बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक से दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। वे एक चीज पूरी होने से पहले ही दूसरी की ओर भागने लगते हैं इसलिए वे प्रायः सफल नहीं होते।

5. आशय स्पष्ट कीजिए - "प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती।"

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का आशय प्रतिभाशाली व्यक्तियों की राह में आने वाली अड़चनों से है।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक ‘बहुमुखी प्रतिभा’ है।

खंड – ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

(क) सभी के लिख चूकने पर भी रामन अभी तक लिख रहा है। (संयुक्त वाक्य)

उत्तर : सभी लिख चूके हैं लेकिन रामन अभी तक लिख रहा है।

(ख) उसके पास घड़ी तो थी, किंतु ठीक नहीं थी। (मिश्र वाक्य)

उत्तर : जो घड़ी उसके पास थी, वह ठीक नहीं थी।

(ग) सूर्य निकला और फूल खिल उठे। (सरल वाक्य)

उत्तर : सूर्य के निकलते ही फूल खिल उठे।

(घ) एक धमाके से चारों ओर चीख-पुकार मच गई। - रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।

उत्तर : सरल वाक्य

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=[4]

(क) <u>मैं</u> पढ़कर बाज़ार जाऊँगी।

उत्तर : मैं - उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, जाऊँगी क्रिया का कर्ता।

(ख) बच्चे <u>बातें कर रहे थे।</u>

उत्तर : बातें कर रहे थे - अकर्मक क्रिया, पूर्ण भूतकाल पुल्लिंग बहुवचन, कर्तृवाच्य, बच्चे कर्ता की क्रिया।

(ग) <u>वाह</u>! टीम इंडिया मैच जीत गयी।

उत्तर : विस्मयादिबोधक, प्रसन्नतासूचक, प्रसन्नता के भाव को दर्शानेवाला।

(घ) <u>सरला</u> पुत्री के पास जयपुर गई।

उत्तर : सरला - व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, गई क्रिया का कर्ता।

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

1. सुमन दौड़ी। (भाववाच्य में बदलिए)

   उत्तर : सुमन से दौड़ा गया।

2. तुम फूल तोड़ोगे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

   उत्तर : तुम्हारे द्वारा फूल तोड़े जाएँगे।

3. पक्षियों से रात में सोया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

   उत्तर : पक्षी रात को सोते हैं।

4. सौमिल से टेनिस नहीं खेली जाती है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

   उत्तर : सौमिल टेनिस नहीं खेलता है।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=[4]

1. चढ़ चेतक पर तलवार उठा करता था भूतल पानी को
   राणा प्रताप सर काट-काट करता था सफल जवानी को
   उत्तर : वीर रस

2. उस काल मरे क्रोध के तन काँपने उसका लगा
   मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा
   उत्तर : रौद्र रस

3. जशोदा हरि पालने झुलावे।
   उत्तर : वात्सल्य रस

4. हुआ न यह भी भाग्य अभागा
   किस पर विकल गर्व यह जागा
   रहे स्मरण ही आते

सखि वे मुझसे कहकर जाते

उत्तर : करुण रस

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2+2+2=[6]

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल-बूते और हौसले से अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

1. भग्नावशेषों को ढोते पिता से क्या आशय है?

   उत्तर : भग्नावशेषों को ढोते पिता से आशय लेखिका के पिता से है। यहाँ पर कहने का तात्पर्य यह है की लेखिका के पिता के गुण खंडहरों की तरह नष्ट हो चुके थे।

2. लेखिका के पिता को अजमेर क्यों आना पड़ा?

उत्तर : एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण लेखिका के पिता को इंदौर से अजमेर आना पड़ा।

3. लेखिका के पिता शक्की क्यों बन गए थे?

उत्तर : लेखिका के पिता किसी पर भी विश्वास कर लिया करते हैं जिसके कारण उन्हें कई बार अपनों के ही हाथों विश्वासघात का शिकार होना पड़ा था और इसी कारण वे इतना शक्की हो गए थे।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़े तो उन्होंने क्या देखा?

उत्तर : लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़े तो उन्होंने देखा कि लखनऊ के नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। उनके सामने तो ताजे चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे।

2. 'फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यहाँ बिस्मिल्ला खाँ ने सुर तथा कपड़े (धन-दौलत) से तुलना करते हुए सुर को अधिक मूल्यवान बताया है। क्योंकि कपड़ा यदि एक बार फट जाए तो दुबारा सिल देने से ठीक हो सकता है। परन्तु किसी का फटा हुआ सुर कभी ठीक नहीं हो सकता है। और उनकी पहचान सुरों से ही थी इसलिए वह यह प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें अच्छा कपड़ा अर्थात् धन-दौलत दें या न दें लेकिन अच्छा सुर अवश्य दें।

3. मूर्ति का चश्मा हर-बार कौन और क्यों बदल देता था?

उत्तर : मूर्ति का चश्मा हर-बार कैप्टन बदल देता था। कैप्टन असलियत में एक गरीब चश्मेवाला था। उसकी कोई दुकान नहीं थी। फेरी लगाकर वह अपने चश्मे बेचता था। जब उसका कोई ग्राहक नेताजी की मूर्ति पर लगे फ्रेम की माँग करता तो कैप्टन मूर्ति पर अन्य फ्रेम लगाकर वह फ्रेम अपने ग्राहक को बेच देता। इसी कारणवश मूर्ति पर कोई स्थाई फ्रेम नहीं रहता था।

4. फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : प्राय: संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं। जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों के परिपाटी का निर्वाहन न कर, वे सबके सुख-दुख में शामिल होते। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना नित्य प्रति काम था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्क़े ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

5. 'बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई'- कथन का आशय समझाइए।

उत्तर : बालगोबिन भगत जीवन-भर भक्ति-भाव में जिए। अंतिम समय तक उनकी इस भक्ति में कोई बदलाव नहीं हुआ। बुढ़ापे में भी वे अपना नित-नियम स्नान ध्यान सब पूर्ववत करते रहे। अंतिम दिन भी उसी प्रकार सायं को पद गाए और भोर को शरीर का त्याग कर

उन्हीं के अनुरूप हुई।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+2=[6]

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज़ में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

1. संगतकार की आवाज कैसी है?

   उत्तर : संगतकार की आवाज मीठी, कमजोर तथा कंपनयुक्त है। वह भारी-भरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है।

2. मुख्य गायक के स्वर के साथ किस की आवाज सुनाई देती है?

   उत्तर : मुख्य गायक के स्वर के साथ उसके कनिष्ठ सहयोगी अथवा संगतकार की आवाज सुनाई देती है।

3. मुख्य गायक की आवाज तथा संगतकार की आवाज में क्या अंतर है?

   उत्तर : मुख्य गायक की आवाज अधिक दमदार तथा मनभावन होती है तथा संगतकार की आवाज कमजोर होती है। उसकी आवाज में सुर का पूरा उतार-चढाव दिखाई नहीं देता।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. गाधिसुत किसे कहा गया है? वे मुनि की किस बात पर मन ही मन मुस्कुरा रहे थे?

   उत्तर : गाधिसुत यहाँ पर ऋषि विश्वामित्र को कहा गया है। विश्वामित्र यहाँ परशुराम की आत्मप्रशंसा की बातों पर मन-ही-मन मुस्कुरा रहे थे। परशुराम विश्वामित्र को देखकर कहते हैं कि वे लक्ष्मण जैसे उद्दंड बालक को केवल उनके कारण छोड़ रहे हैं वर्ना अपने फरसे से लक्ष्मण का वध करके वे अपने गुरु के ऋण से उऋण हो जाते। परशुराम के ऐसा कहने पर मुनि विश्वामित्र मन-ही-मन परशुराम की राम-लक्ष्मण के शौर्य की अनभिज्ञता पर मुस्कुरा उठते हैं।

2. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

   उत्तर : कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में भीषण गति होती है उसी से वह संसार के ताप हरता है। कवि ऐसी ही गति, ऐसी ही भावना और शक्ति चाहता है। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

3. माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

   उत्तर : माँ और बेटी का सम्बन्ध मित्रतापूर्ण होता है। माँ बेटी के सर्वाधिक निकट रहने वाली और उसके सुख-दुख की साथिन होती है। कन्यादान करते समय इस गहरे लगाव को वह महसूस कर रही है कि उसके जाने के बाद वह बिल्कुल खाली हो जाएगी। वह बचपन से अपनी पुत्री को सँभालकर उसका पालन-पोषण एक संचित पूँजी की तरह करती है। जब इस पूँजी अर्थात् बेटी का कन्यादान करेगी

तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। इसलिए माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी लगती है।

4. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : दंतुरित का अर्थ है - बच्चे में पहली बार दाँत निकलना। बच्चों की दंतुरित मुसकान बड़ी मोहक होती है। बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है। बाँस और बबूल जैसी कठोर प्रकृति वाले कवि को लगा कि उसके आस-पास शेफ़ालिका के फूल झड़ने लगे हों। कवि को बच्चे की मुसकान बहुत मनमोहक लगती है जो मृत शरीर में भी प्राण डाल देती है। उस मुसकान से प्रभावित संन्यास धारण कर चुका कवि पुनः गृहस्थ-आश्रम में लौट आया।

5. 'अट नहीं रही' कविता में किस ऋतु का वर्णन है और कौन-सी चीज है, जो अट नहीं रही है?

उत्तर : 'अट नहीं रही' कविता में फागुन ऋतु का वर्णन है। फागुन में प्रकृति अपने चरम सौंदर्य में होती है। फागुन में सर्वत्र मादकता मादकता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधें नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। और फागुन का यही सौंदर्य है जो कवि के अनुसार अटता नहीं है।

प्र.10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। 3×2=[6]

1. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : लेखक ने इस कहानी के आरम्भ में दिखाया है कि भोलानाथ का ज्यादा से ज्यादा समय पिता के साथ बीतता है। कहानी का शीर्षक पहले तो पाठक को कुछ अटपटा-सा लगता है पर जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है बात समझ में आने लगती है। इस कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। भोलानाथ को माता व पिता दोनों से बहुत प्रेम मिला है। उसका दिन पिता की छत्रछाया में ही शुरू होता है। पिता उसकी हर क्रीड़ा में सदैव साथ रहते हैं, विपदा होने पर उसकी रक्षा करते हैं। परन्तु जब वह साँप से डरकर माता की गोद में आता है और माता की जो प्रतिक्रिया होती है, वैसी प्रतिक्रिया या उतनी तड़प एक पिता में नहीं हो सकती। माता उसके भय से भयभीत है, उसके दु:ख से दुखी है, उसके आँसू से खिन्न है। वह अपने पुत्र की पीड़ा को देखकर अपनी सुधबुध खो देती है। वह बस इसी प्रयास में है कि वह अपने पुत्र की पीड़ा को समाप्त कर सके। माँ का यही प्रयास उसके बच्चे को आत्मीय सुख व प्रेम का अनुभव कराता है। उसके बाद तो बात शीशे की तरह साफ़ हो जाती है कि पाठ का शीर्षक 'माता का आँचल' क्यों उचित है। पूरे पाठ में माँ की ममता ही प्रधान दिखती है, इसलिए कहा जा सकता है कि पाठ का शीर्षक सर्वथा उचित है। इसका अन्य शीर्षक हो सकता है- 'माँ की ममता'।

2. 'मन काव्यमय हो उठा, सत्य और सौंदर्य को छूने लगा' किस दृश्य को देखकर लेखिका का मन काव्यमय हो उठा?

उत्तर : हिमालय की गहरी घाटियाँ और वादियों के बीच की सुंदरता के बीच लेखिका की जीप जब 'सेवन सिस्टर्स जलप्रपात' के बिखरे भार-भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के नीचे बैठ गई गई और अपने आत्मा के संगीत को झरने के संगीत के साथ सुनने लगी। लेखिका को ऐसा महसूस हुआ जैसे उनके मन से सारी कलुषिता, तामसिकता उस जलधारा के साथ पैर डुबोते ही बह गई और ऐसे वातावरण में उनका मन काव्यमय हो उठा।

3. हुकमरानों के चेहरों पर उदासी के बादल क्यों छा गए?

उत्तर : मूर्तिकार नाक लगवाने से पूर्व मूर्ति के विषय में कुछ जानकारी चाहता था। जानकारी प्राप्त करने का कार्य एक क्लर्क को सौंपा गया। उस क्लर्क ने पुरातत्व विभाग की सारी फाइलें छानमारी परंतु उसे मूर्ति विषयक कोई जानकारी नहीं मिली और यही बात हुक्मरानों की उदासी का कारण था।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: [10]

वृद्धाश्रम की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि

वो भी क्या दिन होते हैं जब बच्चा अपनी माँ-पिता की उँगली पकड़कर चलना सीखता है। माता-पिता अपने बच्चे की तोतली जबान पर वारे जाते हैं। अपनी इच्छाओं को तिलांजलि देकर वे बच्चे की हर एक इच्छा को पूरी करते हैं। बच्चे के लिए भी माँ–पिता ही उसका संसार होते हैं। फिर क्यों बच्चा जैसे धीरे-धीरे बढ़ा होता जाता है उसके इस संसार में अपने ही

माता-पिता के लिए जगह नहीं बचती। उसी घर मैं जहाँ वह खेल-कूद कर बढ़ा हुआ था वहाँ माता-पिता के लिए जगह नहीं बचती। कल जिन हाथों को थामकर वह चलना सीखा था आज क्यों उन हाथों को छोड़ने के लिए वह मजबूर हो जाता है। इस प्रश्न का उत्तर देने में मैं असमर्थ हूँ।

भारत देश में जहाँ माता-पिता को देवतुल्य समझा जाता है वहाँ बच्चों की इस प्रकार की बेरुखी समझ के परे है। माता-पिता बच्चों को बोझ लगने लगे हैं। आज बच्चे अपने पालक को वृद्धा आश्रम में पटककर अपने कर्तव्य से इतिश्री कर लेते हैं। उन्हें लगता है हम जो कुछ भी कर रहे है वह सही है। वृद्धा आश्रम में उन जैसे वृद्धों के साथ रहकर उनके माता-पिता अच्छा महसूस करेंगे। पर वे क्यों भूल जाते हैं कि माता-पिता को वृद्धावस्था में बच्चों की ज्यादा जरुरत महसूस होती है।

आज पश्चिम को देखकर हम उसका अंधानुकरण करते जा रहे हैं। हम यह कभी नहीं सोचते कि उनकी और हमारी संस्कृति में बड़ा अंतर है। वहाँ आपसी रिश्तों में अपनापन और लगाव बचपन से नहीं होता है। इसलिए उन्हें इस प्रकार वृद्धा आश्रम में रहने से कोई परहेज नहीं होता है परंतु यहाँ भारत में जहाँ संयुक्त परिवारों का चलन होने के कारण हमें अकेले रहने की आदत नहीं होती है। हम हर समय लोगों से घिरे रहते हैं।

आज के नवयुवक प्रतिस्पर्धा से भरे युग में जी रहे हैं आज आगे जाने की चाहत में उनके पास अपने लिए ही समय नहीं बचता तो वे बूढे माँ-बाप के लिए समय कहाँ से निकाले। आज के युवा आगे जाने की होड़ में सारे नाते-रिश्तों को ताक पर रख देते हैं इसलिए आज हमारे देश में भी वृद्धाश्रम की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होती जा रही है।

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट किसी भी

प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। आज भारत में ऐसे कई व्यक्ति मौजूद हैं जो भ्रष्टाचारी है।

आज हम अपने चारों ओर भ्रष्टाचार के अनेक रुप देख सकते हैं जैसे रिश्वत, काला-बाजारी, जान-बूझकर दाम बढ़ाना, पैसा लेकर काम करना, सस्ता सामान लाकर महँगा बेचना आदि।

भष्ट्राचार की लगी अगन है,
जिसने कर दिया मूल्यों का दहन है।

भष्ट्राचार ने भयानक रोग की तरह हमारे समाज को खोखला कर दिया है। आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। असमानता, आर्थिक, सामाजिक या सम्मान, पद-प्रतिष्ठा के कारण भी व्यक्ति अपने आपको भ्रष्ट बना लेता है। भारत के अंदर तो भ्रष्टाचार का फैलाव दिन-भर-दिन बढ़ रहा है।

भष्ट्राचार को तीन प्रमुख वर्गो में विभक्त कर सकते हैं: राजनीतिक, प्रशासनिक और व्यावहारिक। आज सरकारी व गैरसरकारी विभाग से लेकर शिक्षा के मंदिर माने जाने वाले स्कूल व कॉलेज भी इस भ्रष्टाचार से अछूते नहीं है। भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार के कारण भारतीय संस्कृति का पतन हो रहा है। भ्रष्टाचार दूर करने के लिए हमें शिक्षण द्वारा व्यकित के मनोबल को ऊँचा उठाना होगा। सबके लिए उचित रोज़गार उपलब्ध कराना होगा। समाज में विभिन्न स्तरों पर फैले भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर दंड-व्यवस्था उपलब्ध करानी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अपने को इस भ्रष्टाचार से बाहर निकालना होगा। हमें प्रशासन व शासन की व्यवस्था को पूरी तरह स्वच्छ व पारदर्शी बनाना होगा।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

आप अपने विद्यालय के 'सफाई अभियान दल' के नेता है। एक योजना के अन्तर्गत आप छात्रों के एक दल को किसी इलाके में सफाई के प्रति जागरूक करने हेतु ले जाना चाहते हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या जी को इसके लिए स्वीकृति हेतु 80 से 100 शब्दों में पत्र लिखिए।

सेवा में,

प्रधानाचार्य

आदर्श शिशु विहार

जयपुर

दिनाँक: 14 मार्च 20xx

विषय : दसवीं के बच्चों को सफ़ाई अभियान के अंतर्गत 'पवन विहार' ले जाने की अनुमति प्राप्त करने हेतु पत्र

महोदय

मैं विद्यालय का सफाई अभियान दल का नेता हूँ। हमारे विद्यालय के पासवाला इलाका 'पवन विहार' बहुत ही गंदा होता है। जहाँ से हमारे स्कूल के विद्यार्थी आते-जाती है, मैं विद्यालय के दसवीं कक्षा के छात्रों को 17 मार्च शनिवार के दिन वहाँ सफ़ाई के प्रति जागरूकता लाने ले जाना चाहता हूँ। हम सफ़ाई अभियान का महत्त्व बताते हुई लोगों को समझाएँगे की सफाई सामाजिक दायित्व है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप हमें इसकी अनुमति प्रदान करें।

आपका आज्ञाकारी छात्र

सौरभ गुप्ता

नेता- सफाई अभियान दल

कक्षा- दसवीं 'अ'

अथवा

मित्र को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पाने पर 80 से 100 शब्दों में बधाई-पत्र लिखिए।

राजा शिवाजी विद्यालय छात्रावास

मैनपुरी

उत्तर-प्रदेश

दिनाँक: 03 फरवरी, 20xx

प्रिय मित्र अनुज

सप्रेम नमस्ते

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला। अंतर्विदयालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह पढ़कर मन खुशी से झूम उठा। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम भविष्य में ऐसी ही सफलताएँ प्राप्त करते रहो।

तुम्हारे माता पिता को मेरी ओर से सादर प्रणाम तथा छोटी बहन हेमाली को प्यार।

तुम्हारा मित्र

अमर

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

गुलाब जामुन मिक्स का विज्ञापन तैयार कीजिए।

माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स

अब गुलाब जामुन घर पर बनाना हुआ आसान,

माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स के साथ

अथवा

बच्चों की नोटबुक के लिए विज्ञापन बनाइए।

सुंद्रिका नोटबुक

अच्छे सुंदर अक्षर पाइए

सुंद्रिका नोटबुक आज ही लाइए।